कृषि नवाचार
हिन्दी पत्रिका
ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 01 भाग 06 सितम्बर, 2024

आधुनिक खेती में वैदिक सिद्धांतों एवं प्रथाओं का समावेश

सुजीत कुमार चक्रवर्ती[1], सुमति नारायण[2], आस्था[3] और निंदिया भारती[4]

[1] प्रकृत कृषि तंत्र एल.एल.पी., पुणे

[2] प्राध्यापक, सब्जी विज्ञान विभाग, शेर-ए-कश्मीर कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, श्रीनगर, जम्मू और कश्मीर

[3] शोध छात्रा (फल विज्ञान), राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्व विद्यालय, ग्वालियर, म०प्र०

[4] शोध छात्रा, शेर-ए-कश्मीर कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, श्रीनगर, जम्मू और कश्मीर

E-mail: pkt@prakritkrishi.in

आधुनिक खेती का लक्ष्य अधिक उपज प्राप्त करना है, चाहे इसके लिए स्थानिक पर्यावरण में जीवों एवं वनस्पतियों के बीच प्रकृति के अपने मापदंडों के आधार पर मूल पारिस्थितिकी तंत्र में संतुलन की प्रक्रिया की उपेक्षा होती रहे। त्रुटिपूर्ण फसल पद्धति प्रकृति की सार्वभौमिक प्रणाली में नकारात्मक योगदान देता है।

सफल प्राकृतिक खेती करने के लिए कृषक बंधुओं को प्रकृति के बारे में पूर्ण रूप से समझ रहना अति आवश्यक है। प्रकृति का तात्पर्य पूरे ब्रम्हांड से है, न कि केवल पृथ्वी में सतह से ऊपर वायुमंडल, पर्यावरण एवं पाताल में व्याप्त जीवन तक सीमित है। प्रकृति अनंत है, जिसका न कोई यदि है न ही अंत है। ब्रम्हांड (प्रकृति) का न आदि है न अंत है!!

वैदिक सिद्धांत का आधार 'वसुधैव कुटुंबकम' है, तथापि वैदिक प्रथा के अनुसार वैदिक काल में खेतों से उपजे अनाज का बंटवारा करते समय प्रकृति में परिस्थितिकी के संतुलन का पूर्ण रूप से ध्यान रखा जाता था; अतः खेतों में उपजाए गए फसल (अनाज) का दस भागों में बंटवारा किया जाता था, फलस्वरूप अन्न (भोजन) का किसी प्रकार से अपशिष्ट न होने की परंपरा प्रबल थी: -

1. फसल का जमीन से चार अंगुल तक ऊपर का भाग भूमि के लिए छोड़ना।
2. फसल की बाली के नीचे का भाग मवेशियों के चारे के लिए रखाना।
3. पहली फसल की पहली बाली अग्नि को समर्पित करना।
4. बाली से अन्न का दाना निकालने के बाद पहली मुट्ठी पक्षियों को समर्पित करना।
5. अन्न से आटा बनाने के बाद पहली मुट्ठी चींटी को समर्पित करना।
6. गूँथे हुए आटे से चुटकी भर गोली बना कर मछलियों को समर्पित करना।
7. गूँथे हुए आटे से बनी पहली रोटी गौ माता को समर्पित करना।
8. भोजन की पहली थाली बुजुर्गों को परोसे जाने की परंपरा।
9. इसके बाद परिवार के अन्य सदस्यों को भोजन परोसने की परंपरा।

कृषि नवाचार
हिन्दी पत्रिका
ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 01 भाग 06 सितम्बर, 2024

10. सभी के भोजन ग्रहण करने के उपरांत बचे हुए भोजन को श्वान को देना

11. प्रकृति का अनुसरण सर्वप्रथम स्वयं के दैनिक दिनचर्या से प्रारंभ होना चाहिए।

मौसम

जलवायु तथा प्राकृतिक खाद्य शृंखला मे जीवों एवं वनस्पतियों के सह-अस्तित्व, साथ ही इनके बीच गहन संबंध को अनदेखा करना अनुचित है। सभी प्राणियों में जैव-ऊर्जा ब्रह्मांडीय शांतियों से मिलती है। प्रकृति में सुधार की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है, जिसे कोविड महामारी में लॉक-डाउन अवधि में विश्व स्तर पर अनुभव किया एवं देखा गया है। अतः वैदिक मंत्र "प्रकृति के साथ सामंजस्य" रख कर कृषि कार्य करना ही एक मात्र उपाय है।

वेदों में नवग्रह को कृषि, त्याहारों एवं अनुष्ठानों के लिए महत्वपूर्ण माना गया है। वैदिक कृषि पंचांग के अनुसार चंद्र के

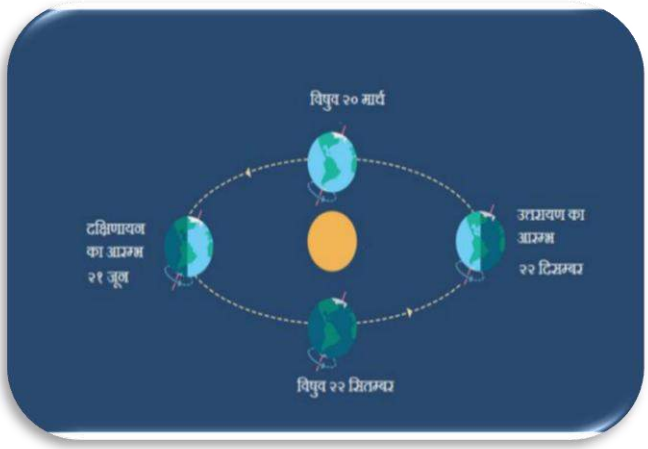

विभिन्न राशि - नक्षत्र में गोचर तथा सौर मण्डल के अन्य ग्रहों की तुलना में विशिष्ट स्थिति पर आधारित होता है । फसलों की सफल खेती के लिए कृषि विज्ञान को चंद्र मास के अनुसार समायोजित करने की आवश्यकता है। चंद्र के विभिन्न चरणों (शुक्ल पक्ष - कृष्ण पक्ष) का संबंध अलग-अलग प्रकार के कीट-रोगों के संक्रमण समय तथा उनके प्रभाव - प्रकोप से गहरा संबंध है। सूर्य के मकर एवं कर्क रेखाओं के बीच अर्ध-वार्षिक पारगमन के फलस्वरूप ऋतु परिवर्तन होता है। विभिन्न फसलों की खेती अनुकूल ऋतुओं के अनुसार ही की जानी है। हिन्द महासागर में विषुवत रेखा के साथ सटे हुए उत्तरी एवं दक्षिणी समुद्री सतह या गहराई में उत्पन्न तापमान के कारण अल नीनों तथा ला नीना का प्रभाव भारतीय भूभाग के वार्षिक जलवायु, विशेषतः मॉनसून के आगमन समय, मात्रा एवं अवधि को निर्धारित करता है। विभिन्न जैविक कारकों जैसे कीट-रोग तथा परागक, एवं अजैविक कारक जैसे मिट्टी की नमी, उर्वरता, तापमान, आद्रता, सूर्य प्रकाश, दिन-रात्री काल, इत्यादि भी अल नीनों तथा ला नीना घटनाओं द्वारा प्रेरित होते है, जिनका सीधा प्रभाव खेतों में फसलों के प्रदर्शन से विदित होता है। कीट एवं रोग नियंत्रण औषधियाँ स्थानीय वनस्पतियों में ही उपलब्ध होती हैं। स्थानीय खरपतवार, मृदा गुणों तथा फसल पर विभिन्न जैविक कारकों के सकारात्मक या नकारात्मक प्रभाव के बारे में संकेत देते है। फसलों में सह-रोपण और फसल चक्र विभिन्न जैविक तथा अजैविक कारकों के स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र में संतुलन बनाए रखता है।

वैदिक कृषि पंचांग, सौर मण्डल में नव ग्रह अर्थात सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि के साथ-साथ दो काल्पनिक ग्रहों राहू-केतु, बारह राशियों तथा सत्ताईस नक्षत्रों से पृथ्वी पर पड़ने वाली ब्रह्मांडीय ऊर्जा के परिणामी बल पर आधारित है। पृथ्वी दिन के समय सूर्य के किरणों के रूप में तथा रात के समय चाँदनी के रूप में ब्रह्मांडीय ऊर्जा प्राप्त करती है । इसके अलावा, पृथ्वी सहित विभिन्न ब्रह्मांडीय पिंडों के बीच गुरुत्वाकर्षण बल का प्रभाव भी सीधे पृथ्वी के जीव-मण्डल में विभिन्न जीवों पर सकारात्मक या नकारात्मक रूप से निरंतर पड़ता रहता है।

इसी प्रकार पौधों में रस का प्रवाह भी चंद्र के शुक्ल पक्ष तथा कृष्ण पक्ष के अनुसार ऊपर या नीचे की दिशा में होता है, जैसा कि

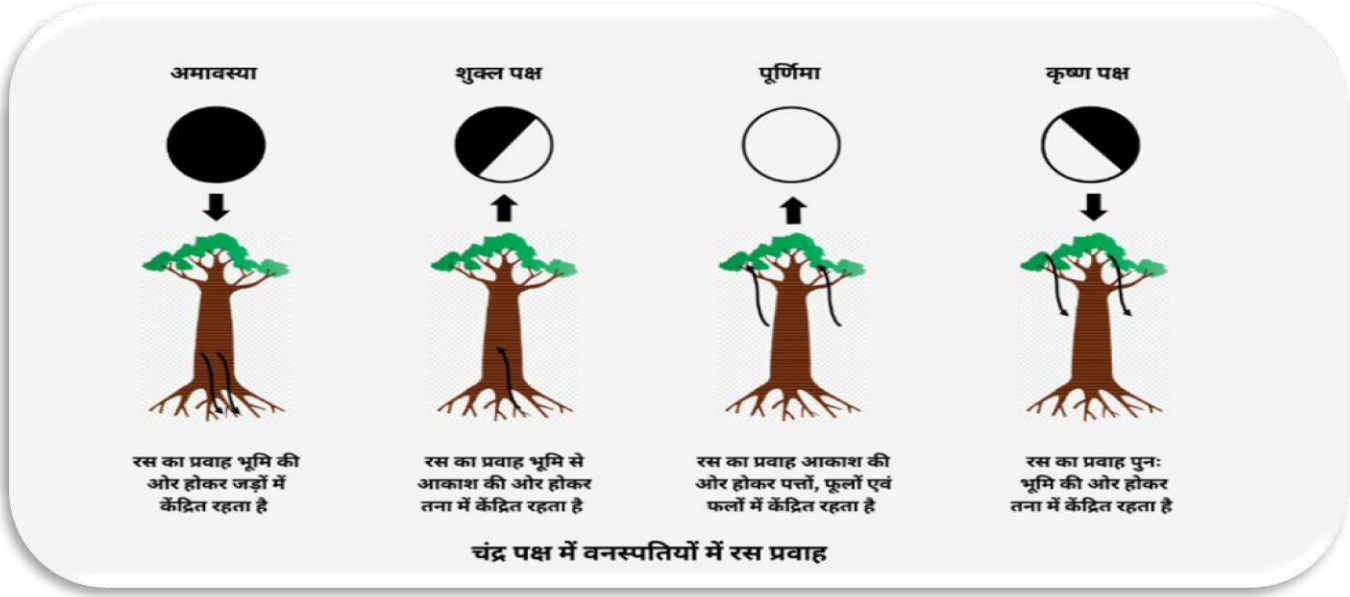

चंद्र पक्ष में वनस्पतियों में रस प्रवाह

कृषि नवाचार
हिन्दी पत्रिका
ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 01 भाग 06 सितम्बर, 2024

संलग्न चित्र में दर्शाया गया है। पूर्णिमा के आस-पास जब पौधे में रस पत्तियों, फूलों एवं फलों मं केंद्रित होता है, तब रस-चूसक कीटों तथा वायु-जनित कवक एवं जीवाणु रोगों का प्रकोप बढ़ जाता है। हालांकि, अमावस्या के आस-पास जब पौधे में रस जड़ों में केंद्रित हो जाता है, तब चबाने वाले कीटों का प्रकोप पौधे के ऊपरी भागों में, परंतु मृदा जनित कवक, जीवाणु तथा कीटों का प्रकोप बढ़ जाता है। अमावस्या की रात को चंद्र पूर्ण रूप से अनुपस्थित रहता है। पौधों में रस का केंद्र जड़ों में केंद्रित रहता है। चंद्रोदय पूर्वी दिशा के क्षितिज से सूर्योदय के समयकाल के समानांतर होता है। शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से सप्तमी तक पहले सात दिन अर्थात प्रथम सप्ताह, जब चंद्र शून्य से अर्ध चंद्राकार यानि काली-अंधेरी रात से मध्यम चाँदनी रात तक की अवधि, जब पौधों में रस का प्रवाह भूमि से आकाश की दिशा में हुए तने में केंद्रित रहता है। इसी पक्ष के अष्टमी से चतुर्दशी अगले सात दिन अर्थात द्वितीय सप्ताह, जब चंद्र अर्ध चंद्राकार से पूर्ण चमक यानि मध्यम चाँदनी से पूनम की रात तक रस का प्रवाह और ऊपर की दिशा में उठकर पौधों के पत्तों, फूलों और फलों में केंद्रित होने लगता है। पूर्णिमा को चंद्र पूर्ण आकार एवं चमकके साथ रातभर दिखाई पड़ता है। पौधों में रस पत्तों, फूलों एवं फलों में केंद्रित होता है। पूर्णिमा के बाद कृष्ण पक्ष में प्रतिपदा से सप्तमी तक सात दिन अर्थात तृतीय सप्ताह में चंद्र पूर्ण चमक से अर्ध चंद्राकार यानि पूर्ण चाँदनी से अर्ध चाँदनी की ओर बढ़ता है। इस समय रस का प्रवाह आकाश से भूमि (नीचे) की दिशा में होता है, और पुनः एक बार रस पौधों के तने में केंद्रित होने लगता है। अष्टमी से चतुर्दशी के सात दिन अर्थात चौथे सप्ताह में चंद्र अर्धचंद्राकार से पूर्ण रूप से विलुप्त होते हुए मध्यम चाँदनी से काली रात में परिवर्तित हो जाता है। इस समय रस का प्रवाह और नीचे की दिशा होकर पौधों में जड़ों के समीप केंद्रित होता है। इसके बाद अमावस्या को पुनः पौधों में रस का केंद्र जड़ों में केंद्रित रहता है।

प्रकृति के नियमों के अनुसरण करते हुए स्थानिक वनस्पति का उपयोग करके फसल सुरक्षा उपायों को निर्धारित करने से अनावश्यक प्रयासों एवं खर्चों को बचाने में मदद मिलती है, साथ ही स्वस्थ फसल एवं अधिक उपज प्राप्त होती है। चंद्र मास के अनुसार कृषि कार्य करने से रोगों एवं कीटों के प्रादुर्भाव में कमी होती है, साथ ही उच्च गुणवत्ता एवं अधिक उत्पादन मिलता है, जिससे आय में वृद्धि होना स्वाभाविक है।

वैदिक सिद्धांतों के आधार पर यह माना गया है, कि नव-ग्रहों में राहू–केतु का प्रभाव वनस्पतियों (कृषि कार्य) पर बहुत महत्वपूर्ण है। सर्वप्रथम यह समझना आवश्यक है, कि राहू–केतु को ग्रहों समकक्ष क्यों माना गया है, जबकि सौर मण्डल में इस नाम से कोई भी गृह उपस्थित नहीं है। वास्तविक रूप से ये सौर मण्डल गृह समूह नहीं हैं, अर्थात राहू और केतु को काल्पनिक ग्रह, जो कि पृथ्वी एवं चंद्र के परिक्रमा पथ में प्रतिच्छेदन बिन्दु मात्र हैं। परंतु जब चंद्र इन बिंदुओं पर होता है, तब चंद्र की ऊर्जा तथा गुरुत्वाकर्षण बल का प्रभाव पृथ्वी के निष्क्रिय सा हो जाता है, जिसका सर्वाधिक असर वनस्पतियों पर पड़ता है। अतएव, चंद्र के इन बिंदुओं पर होने से लगभग चार घंटे पहले और बाद तक का समय सभी प्रकार के कृषि कार्यों के लिए वर्जित माना गया है। साधारणतः राहू चंद्र के आरोह चरण में तथा केतु अवरोह चरण में आता है।

इसी प्रकार, चंद्र के पृथ्वी से दूरी भी सदैव एक समान नहीं रहता है। प्रत्येक चंद्र-मास में दो सप्ताह के अंतराल में एक बार निकटतम दूरी उपभू स्थिति तथा अधिकतम दूरी अपभू स्थिति आती है। उपभू स्थिति के समय चंद्र की ऊर्जा एवं गुरुत्वाकर्षण बल सामान्य से अधिक प्रबल तथा अपभू स्थिति में यह सामान्य से कम (क्षीण) हो जाता है। चंद्र के इन बिंदुओं पर रहते समय भी चार घंटे पहले और बाद तक का समय सभी प्रकार के कृषि कार्यों के लिए वर्जित माना गया है। उपभू की स्थिति में रोगों का प्रकोप बढ़ने की आशंका बनी रहती है। जबकि, अपभू के समय मिट्टी में नमी कम होने पर छेदक तथा चूषक कीटों का प्रकोप बढ़ने की संभावना बनती है। परंतु ऐसा देखा गया है, आलू की बुआई उपभू के समय

समूह	तत्व	राशि	फसल
१	अग्नि	मेष, सिंह, धनु	सभी प्रकार के फल जैसे आम, अमरूद, सेव, टमाटर, भिंडी, खीरा इत्यादि एवं बीज वाले फसल जैसे धन, गेहूं, मक्का इत्यादि
२	भूमि	वृषभ, कन्या, मकर	आलू,प्याज, लहसुन, गाजर, मूली, हल्दी, अदरक, शकरकंद, कसवा, शलगम, चुकंदर, रतालू, अरबी, सूरन इत्यादि
३	वायु	मिथुन, तुला, कुंभ	फूल गोभी, ब्राक्ली, अराली, धतूरा, अरंडी, केसर, गुड़हल,गेंदा, गुलाब, चमेली, कोंहड़ा फूल, केला फूल, सहजन फूल, सरसों फूल इत्यादि
४	नीर	कर्क, वृश्चिक, मीन	पालक, मेथी, धनिया, पुदीना, करी पत्ता, लेटूस, गोभी, , केल, सेलेरी, पार्सली, अर्टीचोक, अरगुला, लीक, सुआ, हरी-लाल चौलाई, बीट साग, मूली साग, सलगम साग, सरसों साग सहजन पत्ता, प्याज पत्ता, लहसुन पत्ता इत्यादि

ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 01 भाग 06 सितम्बर, 2024

करने पर एक समान, आकार में बड़े, उत्तम गुणवत्ता के स्वस्थ कंद परंतु संख्या में कम उत्पादन मिलता है। जबकि, अपभू के समय में आलू की बुआईकरने पर एक समान, आकार में छोटे, उत्तम गुणवत्ता के स्वस्थ कंद परंतु संख्या में अधिक उत्पादन मिलता है।

विशिष्ट ग्रहों की शक्तियां पृथ्वी पर विभिन्न जीव-जंतुओं के रचना एवं विकास में सकारात्मक भूमिका निभाती है। उदाहरण के लिए फूलगोभी की आकृति या सूरजमुखी के फूल में बीजों की स्थिति का क्रम या सीपों का आकार या शंख की संरचना ग्रहीय ऊर्जा द्वारा निर्धारित होता है। इसी प्रकार पौधों में विभिन्न भागों के विकास की प्रक्रिया में भी नवग्रह में से सौर मण्डल के सात ग्रहों के विशेष प्रभाव से होता है। फसल की जड़ों पर चंद्र, तने एवं शाखाओं पर सूर्य, पत्तों पर बुध एवं शुक्र, फूलों पर मंगल, फलों पर बृहस्पति तथा बीजों पर शनि के प्रभाव से विकसित होता है। इसी प्रकार चंद्र की ऊर्जा से वानस्पतिक वृद्धि एवं विकास को प्राकृतिक प्रोत्साहन मिलता है। साथ ही साथ शनि की ऊर्जा से प्रजननात्मक वृद्धि एवं विकास को प्राकृतिक प्रोत्साहन मिलता है। अतः चंद्र मास में पंच-तत्वों के आधार पर राशि-नक्षत्र के अनुसार फसल समूह को विचार करके खेती की योजना बनाने से अनेक प्रकार के प्राकृतिक समस्याओं से बचा जा सकता है।

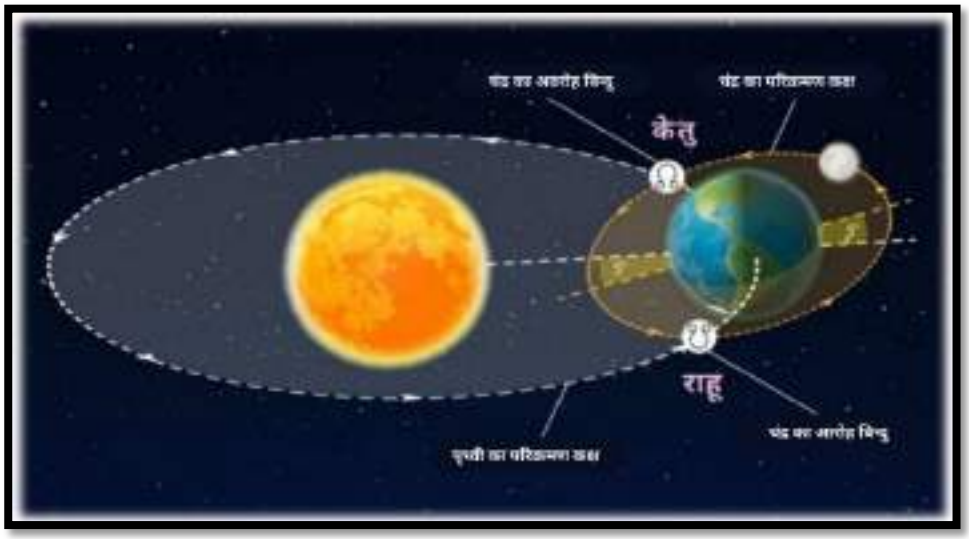

उद्धरण:

१. वैदिक कृषि पंचांग
२. यूट्यूब चैनल: